

आधुनिक शिक्षा में भारतीय शिक्षा प्रणाली का एकीकरण : चुनौतियाँ एवं आगे की राह

Dr. Bhawna Diwaker

Assistant Professor, Political Science
Govt. Danveer Tularam PG College Utai, Durg (C.G.)

सार (Abstract)

शिक्षा किसी भी समाज के विकास और प्रगति का प्रमुख आधार होती है। भारत की शिक्षा प्रणाली प्राचीन काल से ही अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली रही है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता, अनुशासन, आध्यात्मिकता तथा जीवन मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता था। गुरुकुल प्रणाली, नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षण संस्थान इस बात के प्रमाण हैं कि भारत में शिक्षा का स्तर अत्यंत उच्च था।

वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर अधिक केंद्रित है। हालांकि इस प्रक्रिया में कई बार नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आधार की उपेक्षा भी देखने को मिलती है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल तत्वों का समावेश किया जाए।

यह शोध-लेख आधुनिक शिक्षा में भारतीय शिक्षा प्रणाली के एकीकरण की आवश्यकता, उसके सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों तथा भविष्य में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के संभावित उपायों पर प्रकाश डालता है।

मुख्य शब्द (Keywords) : भारतीय शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा, नैतिक मूल्य, शिक्षा नीति, एकीकरण

प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाला देश है, जहाँ शिक्षा को सदैव अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। भारतीय समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना भी रहा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करने पर विशेष बल दिया जाता था।

प्राचीन समय में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरुकुल में शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी बल्कि जीवन जीने की कला, अनुशासन, आत्मसंयम और सामाजिक जिम्मेदारी भी सिखाई जाती थी।

समय के साथ-साथ शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हुए। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों द्वारा लागू की गई शिक्षा प्रणाली ने भारतीय शिक्षा की दिशा को काफी हद तक बदल दिया। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विज्ञान, तकनीक और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया, जो आज के समय की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

हालांकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली की अपनी उपयोगिता है, लेकिन इसमें कई बार भारतीय संस्कृति, नैतिकता और पारंपरिक ज्ञान को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक शिक्षा में भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल तत्वों का समन्वय किया जाए, ताकि विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव हो सके।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ

भारतीय शिक्षा प्रणाली की कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ रही हैं, जिनके कारण यह विश्वभर में प्रसिद्ध रही है।

1. समग्र विकास की अवधारणा

भारतीय शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करना था। इसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर समान रूप से ध्यान दिया जाता था।

2. गुरु-शिष्य परंपरा

गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा प्रणाली की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है। गुरु को केवल शिक्षक ही नहीं बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श माना जाता था। गुरु अपने शिष्यों को जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में शिक्षित करते थे।

3. नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर बल

प्राचीन भारतीय शिक्षा में सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन और सेवा जैसे मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। इससे समाज में नैतिकता और सामाजिक समरसता बनी रहती थी।

4. प्रकृति के साथ सामंजस्य

प्राचीन शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ जोड़कर शिक्षा दी जाती थी। इससे उनमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं, जिन्होंने शिक्षा को अधिक व्यापक और प्रभावी बनाया है।

1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक सोच और तर्कसंगत दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों में अनुसंधान और नवाचार की भावना विकसित होती है।

2. तकनीकी विकास

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विकास ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। आज ऑनलाइन शिक्षा, स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ हो गई है।

3. वैश्विक प्रतिस्पर्धा

आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करती है। विदेशी भाषाओं, प्रबंधन और तकनीकी कौशल पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के एकीकरण की आवश्यकता

आज के समय में यह आवश्यक हो गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल्यों और सिद्धांतों का समावेश किया जाए। इसके कई कारण हैं।

पहला, भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता था। वर्तमान समय में समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिलता है। यदि शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों को पुनः शामिल किया जाए तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

दूसरा, भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भी शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश आवश्यक है।

तीसरा, योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन और साहित्य जैसे विषयों का अध्ययन विद्यार्थियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

एकीकरण के सामने चुनौतियाँ

1. पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव

आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर पश्चिमी देशों की शिक्षा पद्धति का प्रभाव अधिक है। इसके कारण भारतीय पारंपरिक ज्ञान को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता।

2. पाठ्यक्रम का अत्यधिक बोझ

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पहले से ही अनेक विषय शामिल हैं। ऐसे में नए विषयों को जोड़ना कई बार कठिन हो जाता है।

3. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा दोनों का समुचित ज्ञान रखने वाले शिक्षकों की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

4. जागरूकता का अभाव

कई बार विद्यार्थी और अभिभावक भारतीय शिक्षा प्रणाली के महत्व को पर्याप्त रूप से नहीं समझ पाते, जिससे इसके एकीकरण में कठिनाई आती है।

आगे की राह (Future Prospects)

1. नई शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन

भारत सरकार द्वारा लागू की गई नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने पर विशेष जोर दिया गया है। इसका प्रभावी क्रियान्वयन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

2. पाठ्यक्रम में भारतीय विषयों का समावेश

विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर भारतीय संस्कृति, दर्शन, योग और नैतिक शिक्षा जैसे विषयों को शामिल किया जाना चाहिए।

3. शिक्षक प्रशिक्षण

शिक्षकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा के समन्वय के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

4. तकनीक का उपयोग

डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा से संबंधित सामग्री को विद्यार्थियों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है।

5. अनुसंधान को प्रोत्साहन

भारतीय शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पहलुओं पर अधिक शोध और अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय शिक्षा प्रणाली का एकीकरण वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इससे शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं रहेगी बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण का साधन भी बनेगी।

भारतीय शिक्षा प्रणाली की मूल भावना समग्र विकास और मानवीय मूल्यों पर आधारित है। यदि इन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाए तो एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है जो विद्यार्थियों को केवल सफल ही नहीं बल्कि जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक भी बनाए।

इस दिशा में सरकार, शिक्षण संस्थानों, शिक्षकों और समाज सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। तभी हम एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकेंगे जो आधुनिक भी हो और भारतीय मूल्यों से भी समृद्ध हो।

संदर्भ (References)

- 1) Mahatma Gandhi : नई तालीम
- 2) Rabindranath Tagore : शिक्षा और संस्कृति
- 3) Dr. Sarvepalli Radhakrishnan : University Education Commission Report (1948)
- 4) National Council of Educational Research and Training : NCF 2005
- 5) अग्रवाल, जे.सी. – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार
- 6) शर्मा, आर.ए. – भारतीय शिक्षा का इतिहास
- 7) भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली
- 8) Kapil Kapoor. (2019). Indian Knowledge Systems: Nature and Relevance. New Delhi
- 9) Sharma, R. N. (2018). Indian Education System and Philosophy. Atlantic Publishers
- 10) Ministry of Education. (2021) Promotion of Indian Knowledge Systems in Education